पाठ - 31

FDHJ9L

सुभाषचंद्र बोस

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में ऐसे अनेक महापुरुषों का अविस्मरणीय योगदान रहा है जिन्होंने मातृभूमि को स्वतंत्र कराने हेतु अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। ऐसे ही एक विलक्षण महान पुरुष सुभाषचंद्र्र बोस थे, जो भारत की स्वतंत्रता के लिए जन्मे, जीवित रहे और अंतिम साँस तक संघर्षरत रहे। उन्होंने मातृभूमि से दूर रहकर विदेश में अपने दृढ़ संकल्प, अदम्य साहस, असीम त्याग और अद्भुत शौर्य द्वारा एक विशाल संगठन बनाकर विश्व में कर्म साधना का एक आदर्श उपस्थित कर दिया।

सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, सन् 1897 ई0 में उड़ीसा के कटक में हुआ। इनके पिता का नाम जानकी नाथ बोस एवं माता का नाम प्रभावती देवी था। कटक से प्राइमरी शिक्षा पूर्ण कर सन् 1909 ई0 में उन्होंने रेवेनशा कॉलेजिऐट स्कूल में दाखिला लिया। कॉलेज के प्रिंसिपल बेनीमाधव दास के व्यक्तित्व का सुभाष के मन पर गहरा प्रभाव पड़ा। मात्र 15 वर्ष की आयु में इन्होंने विवेकानंद साहित्य का पूर्ण अध्ययन कर लिया था। बी0ए0 (आनर्स) की परीक्षा सन् 1919 ई0 में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। कलकत्ता विश्वविद्यालय में उनका दूसरा स्थान था। पिता की इच्छा थी कि सुभाष आई.सी.एस. बनें। पिता की इच्छा पूर्ण करने के लिए वे इंग्लैंड चले गये तथा सन् 1920 ई0 में आई.सी.एस. (भारतीय सिविल सेवा) परीक्षा उत्तीर्ण करते हुए वरीयता सूची में चैथा स्थान प्राप्त किया परंतु नौकरी छोड़कर उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन भारतीय स्वतत्रंता संग्राम को समर्पित कर दिया।

गांधी जी और सुभाषचंद्र के बीच पहली मुलाकात 20 जुलाई, सन् 1921 ई0 को हुई। इन दिनों गांध्ाी जी ने अंग्रेज सरकार के खिलाफ असहयोग आंदोलन चला रखा था। महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन में उनकी निष्ठा नहीं थी तथापि उन्होंने उसमें सहयोग किया और जेल गए। भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के प्रति उनका अभिमत था कि शक्तिशाली की आवाज में ही वास्तविक दम होता है। उनका चिंतन था कि अतिशय अहिंसा देश के पराभव के लिए उत्तरदायी है। उनका विचार था कि ब्रिटिश सत्ता के सामने विनम्रता और गिड़गिड़ाने के बजाय बुलंद आवाज में अपना पक्ष रखा जाए। सन् 1928 ई0 में जब साइमन कमीशन भारत आया तब कांग्रेस ने उसे काले झंडे दिखाए। कलकत्ता (कोलकाता) में सुभाषचंद्र बोस ने इस आंदोलन का कुशल नेतृत्व किया।

सुभाषचंद्र बोस की क्रांतिकारी गतिविधियों से आतंकित अंग्रेजी सरकार ने सन् 1925 ई0 में उन्हें गिरफ्तार कर म्यांमार के मांडले जेल भेज दिया। सन् 1930 ई0 में जेल में रहते हुए ही वह कलकत्ता के महापौर चुने गए, इसलिए सरकार उन्हें रिहा करने पर मजबूर हो गई। सन् 1932 ई0 में उन्हें फिर कारावास में डाल दिया गया। बीमारी के कारण सरकार ने इलाज हेतु उन्हें यूरोप जाने की अनुमति दे दी। भारत लौटने पर सन् 1938 ई0 में उन्हें हरिपुरा कांग्रेस का सभापति निर्वाचित किया गया। सुभाष जी के क्रांतिकारी विचारों के कारण अपने ही दल के नेताओं से उनका तीव्र मतभेद रहा। तीव्र अंतर्विरोधों के बावजूद सन् 1939 ई0 में उन्होंने कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव में पट्टाभि सीतारमैया को पराजित किया।

उन्होंने अध्यक्ष पद से त्याग पत्र देकर 3 मई, सन् 1939 ई0 को 'फॉरवर्ड ब्लॉक' नामक दल का गठन किया। शीघ्र ही बहुत से नवयुवक उनके दल में सम्मिलित हो गए। सुभाष और उनके संगठन फॉरवर्ड ब्लॉक ने स्वाधीनता आंदोलन को और अधिक तीव्र करने के लिए जन-जागरण का अभियान प्रारंभ कर दिया। उनकी यूथ ब्रिग्रेड ने कलकत्ता स्थित 'हालवेट स्तंभ' को रातोंरात मिट्टी में मिला दिया। इसके फलस्वरूप अंग्रेज सरकार ने सुभाष सहित फॉरवर्ड ब्लॉक के प्रमुख नेताओं को बंदी बना लिया। बंदी रहते हुए उन्होंने सरकार को चेतावनी देते हुए पत्र लिखा-"मुझे मुक्त कर दीजिए अन्यथा मैं जीवित रहने से इंकार कर दूँगा। इस बात का निश्चय करना मेरे वश में है कि मैं जीवित रहूँ या मर जाऊँ। शहीदों का खून धर्म का बीज होता है। मुझे आज अवश्य मर जाना चाहिए जिससे भारत स्वतंत्र और प्रतापी हो। अपने देशवासियों को मुझे यही कहना है-भूलना मत कि दासता मनुष्य के लिए सबसे पहला पाप है।" इस पत्र का सरकार पर गंभीर प्रभाव पड़ा। उनके आमरण अनशन के कारण सरकार को उन्हें रिहा करना पड़ा।

इस समय द्वितीय विश्वयुद्ध चल रहा था। अतः सरकार नहीं चाहती थी कि युद्ध के दौरान सुभाष मुक्त रहें। अतः उन्हें नजरबंद कर दिया गया। जनवरी, सन् 1941 ई0 में पुलिस को चकमा देते हुए वह वेश बदलकर गायब हो गए और जर्मनी पहँुच गए। दिसम्बर सन् 1941 ई0 में जापान ने अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध्ा की घोषणा कर दी। 4 जुलाई, सन् 1943 ई0 को सुभाषचंद्रर् बोस ने 'आजाद हिंद फौज' की कमान संभाली। आजाद हिंद फौज के सिपाही उन्हें 'नेता जी' कहते थे।

'जय हिंद', 'दिल्ली चलो', 'लाल किला हमारा है', 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा' आदि उनके जीवंत नारे थे। 21 अक्टूबर, सन् 1943 ई0 को आजाद हिंद फौज के सर्वोच्च सेनापति की हैसियत से उन्होंने सिंगापुर में भारत की अस्थायी सरकार की स्थापना की। इस सरकार को कुल नौ देशों ने मान्यता दी। उन्होंने आजाद हिंद फौज का मुख्यालय सिंगापुर एवं रंगून में बनाया। उन्होंने रानी झाँसी रेजीमेन्ट के नाम से स्त्री सैनिकों का भी एक दल बनाया।

जुलाई सन् 1944 ई0 में सुभाषचंद्र बोस ने आजाद हिंद रेडियो पर बोलते हुए गांधी जी को राष्ट्रपिता संबोध्ाित करते हुए कहा कि- "भारत की स्वाधीनता का आखिरी युद्ध शुरू हो चुका है। राष्ट्रपिता भारत की मुक्ति के इस पवित्र युद्ध में हम आपका आशीर्वाद और शुभकामनाएँ चाहते हैं।" जापानी सेना के सहयोग से आजाद हिंद फौज ने अंडमान और

निकोबार द्वीप पर विजय प्राप्त कर अंडमान का नाम 'शहीद द्वीप' और निकोबार का नाम 'स्वराज्य द्वीप' रखा। इसी क्रम में दोनों फौजों ने मिलकर इंफाल और कोहिमा पर आक्रमण किया। इन क्षेत्रों पर जीत प्राप्त कर सुभाषचंद्र बोस ने 22 सितंबर, सन् 1944 ई0 को शहीदी दिवस मनाया, परंतु जापान की पराजय के साथ ही युद्ध का पासा पलटा, अंग्रेजों का पलड़ा भारी पड़ा और नेता जी को पीछे हटना पड़ा। माना जाता है कि 18 अगस्त, सन् 1945 ई0 को हवाई जहाज से मन्चूरिया की तरफ जाते हुए वह लापता हो गए। 23 अगस्त, सन् 1945 ई0 को टोकियो रेडियो ने बताया कि ताइहोकू हवाई अड्डे के पास उनका विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया जिसमें वे बुरी तरह घायल हो गए और ताइहोकू सैनिक अस्पताल में उन्होंने दम तोड़ दिया। 18 अगस्त, सन् 1945 ई0 की यह घटना आज भी भारतीय इतिहास का अनुत्तरित रहस्य है।

नेता जी सुभाषचंद्र बोस लेखक, सैनिक, दार्शनिक, राजनीतिज्ञ, कुशल प्रशासक, सेनानायक, वक्ता व भविष्य दृष्टा के रूप में बहुमुखी व्यक्तित्व के धनी थे। वह स्वभाव से आध्यात्मिक संत थे। देश की आजादी के लिए उन्होंने संघर्ष का रास्ता चुना परंतु उनकी वृत्ति अंततः आध्यात्मिक ही थी।

भारतमाता का यह वीर सपूत अपने अटूट मातृभूमि प्रेम के कारण इतिहास में अपना नाम सदा के लिए अमर कर गया।

अभ्यास

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए-

1. सुभाषचंद्र बोस ने सिविल सेवा से त्यागपत्र क्यों दिया ?

2. भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के प्रति सुभाषचंद्र बोस का क्या विचार था ?

3. सुभाष सहित 'फॉरवर्ड ब्लॉक' के प्रमुख नेताओं को किस कारण बंदी बना लिया गया ?

4. बंदी रहते हुए नेताजी ने ब्रिटिश सरकार को भेजे गए चेतावनी पत्र में क्या लिखा था ?

5. सुभाषचंद्र बोस द्वारा दिए गए प्रसिद्ध नारों को लिखिए।